अध्याय : 2

दीप्ति खण्डेलवाल के उपन्यासों का सामान्य परिचय

अध्याय : 2

दीप्ति खण्डेलवाल के उपन्यासों का सामान्य परिचय

भूमिका

आधुनिक गद्य साहित्य में महिला रचनाकारों की एक सशक्त पीढ़ी का उदय हुआ है। विशेषतया स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद नारी जागरण और स्त्री-शिक्षा के व्यापक प्रचार-प्रसार के फलस्वरूप इस क्षेत्र में महिला रचनाकारों ने अपना योगदान दिया है। इनमें दीप्ति खण्डेलवाल एक ऐसी गद्य रचनाकार है कि जिसने नारी मन के विविध स्तरों और परतों का सूक्ष्म विवेचन तो किया ही है पर साथ ही साथ पुरूष की परम्परावादी मानसिकता एवं शोषण प्रवृत्ति का भी पर्दाफाश किया है। उनके "कड़वे सच", "धूप के अहसास" (1976 ई.) वह तीसरा (1976 ई.) नारी मन (1979 ई.) औरत और नाते (1980 ई.) आदि कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं।

आपने "प्रिया" (1976 ई) "कोहरे" (1977 ई.), "प्रतिध्वनियाँ" (1978 ई.) उपन्यास लिखे हैं। जिसके केन्द्र में नारी का सूक्ष्म विश्लेषण प्राप्त होता है। परिवर्तित माहौल के कारण स्त्री-पुरूष सम्बन्धों में जो जटिलता आयी है उसका मनोविश्लेषण आपने किया है। आज भी पुरूष का अहं नारी को अभिशप्त जीवन देने में कार्यरत है। वह उस पर एकाधिकार चाहता है और स्वयं स्वच्छन्द आचरण करता है। उसे आज भी वह उपभोग की वस्तु मानकर सहेजकर रखना चाहता है।

दीप्ति खण्डेलवाल के उपन्यासों की अवधारणा

हिन्दी उपन्यासकारों में महिला उपन्यासकारों का भी एक विशिष्ट योगदान नज़र आता है। महिला उपन्यासकारों ने मुख्यतया स्त्री-पुरूष संबंधों के बारे में ज्यादातर उपन्यास लिखे हैं। भारत की आज़ादी के उपरान्त मानव जीवन-मूल्यों

में जो विविध परिवर्तन हुए हैं उनको ध्यान में रखकर महिला उपन्यासकारों में उषा प्रियम्वदा (रूकोगी नहीं ···राधिका ?, शेष यात्रा), कृष्णा सोबती (मित्रो मरजानी, यारों के यार, सूरजमुखी अँधेरे के), कृष्णा अग्निहोत्री (बात एक औरत की), निरूपमा सेवती (पतझड की आवाजें, बँटता हुआ आदमी), ममता कालियाँ (बेघर, नरक दर नरक), मन्नू भंडारी (आपका बंटी, स्वामी, महाभोज), मंजुल भगत (टूटा हुआ इंद्रधनुष्य, अनाशे), मेहरून्निसा परवेज (उसका घर, कोरजा), शिवानी (चौदह फेरे, कृष्णकली), मृदुला गर्ग (चित्तकोबरा, मैं और मैं), रजनी पानिकर (मोम के मोती), शशिप्रभा शास्त्री (सीढ़िया, परछाईयों के पीछे), सूर्यबाला (मेरे संधि पत्र), मालती जोशी (सहचारिणी, समर्पण का सुख) आदि उपन्यासकारों का बदलते जीवन-मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन महिला उपन्यासकारों के परिप्रेक्ष्य में आठवें दशक की महिला उपन्यासकार दीप्ति खण्डेलवाल वर्तमान जीवन संदर्भ का यथार्थवादी वर्णन करने वाली सजग महिला उपन्यासकार हैं। साठोत्तर भारत में परिवर्तित स्त्री-पुरूष संबंधों को परिलक्षित करते हुए उन्होंने उपन्यास लिखें हैं। उनके उपन्यासों की अवधारणा में नारी जीवन-मूल्यों का विशेष महत्व है। आधुनिक नारी अपने स्व की रक्षा के लिए और अधिकारों की माँग के लिए पुरूष से लड़ती-जूझती रही है। व्यक्ति स्वातंत्र्य के बारे में उनके मौलिक विचार हैं। स्त्री और पुरूष मानव जीवन प्रवाह के दो छोर हैं, लेकिन आज वर्तमान काल में भी स्त्री का शोषण ज्यादातर पुरूष ही कर रहे हैं। ये पुरूष हवस के मानो पुजारी बन गये हैं और नारी को भोग की वस्तु की रूप में देखकर उसका शोषण करने में मशगुल हैं। नारी शोषण के खिलाफ स्त्री की लड़ने की चाह बढ़ती ही रही है, लेकिन पुरूष प्रधान संस्कृति में आज की नारी प्रयत्न करने पर भी पूरी तरह से अपने ख्वाब की-व्यक्ति स्वातंत्र्य-की रक्षा के लिए कामयाब नहीं हो सकी है। स्त्री-पुरूष के इस सम्बन्ध को रेखांकित करने को ही दीप्ति खण्डेलवाल ने अपनी कलम चलायी है। साथ ही साथ वर्तमान जीवन में आर्थिक शोषण, शारीरिक शोषण, नैतिकता के नये प्रतिमानों को तथा एकक परिवार की विचित्र स्थिति को शब्दांकित करने का लेखिका का प्रयास उल्लेखनीय है। व्यक्ति, परिवार, समाज, राजनीति, आर्थिक स्थिति और सांस्कृतिक परिवेश को प्रासंगिक रूप में अभिव्यक्त करना लेखिका

की अपनी विशिष्टता है। लेकिन दीप्ति खण्डेलवाल के जो उपन्यास प्रकाशित हुए हैं, उनमें प्रिया, कोहरे, प्रतिध्वनियाँ प्रतिनिधि उपन्यास हैं। जिनकी अवधारणा परिवर्तित मानव जीवन-मूल्यों को रेखांकित करने की दृष्टि से विशेष महत्व रखती है। उनके विवेच्य तीनों उपन्यासों का परिवर्तित जीवन-मूल्यों के संदर्भ में सामान्य परिचय इस प्रकार दिया जा सकता है -

"प्रिया" कथ्यचेतना : नारी का पुरुष द्वारा दैहिक और मानसिक शोषण

"प्रिया" उपन्यास नारी समस्या को केंद्र में रखकर लिखा हुआ उपन्यास है। नारी के मन में एक चाह होती है कि वह किसी पुरुष की प्रिया बने, पर इस चाह के कारण वह निरंतर पुरुष द्वारा शोषित होती आयी है। प्रिय होने की चाह से वह निरंतर छटपटाती है, अतृप्त रहती है। प्रस्तुत उपन्यास में सौदामिनी, चित्रा और प्रिया ये तीनों नारियाँ शोषण का शिकार बनी तथा प्रताड़ित तिरस्कृत नारी वर्ग का प्रतिनिधित्व करती नज़र आती हैं। उपन्यास मनोविश्लेषणात्मक चित्रण पर आधारित है। बाह्य स्थिति के कारण जो आंतरिक संघर्ष निर्माण होता है, उसका सूक्ष्मता से वर्णन किया गया है।

सौदामिनी रविशंकर की बेटी है और प्रिया सौदामिनी की बेटी। सौदामिनी के पिता जब अल्हड युवक थे तब गाँव के एक कुँवार कुम्हार की लड़की राधा को बेहद चाहते थे। अचानक गाँव में महामारी फैल जाती है। रविशंकर राधा को लेकर शहर चले जाते हैं। वहाँ मेहनत, मजदूरी करते हैं, परंतु समाज की नज़रों से राधा को बचाने की समस्या में घिर जाते हैं। लोगों द्वारा प्रताड़ित रविशंकर (बाबा) अपना एक हाथ गँवा बैठते हैं। इसी बीच सौदामिनी का जन्म होता है और राधा परलोक सिधर जाती है। रविशंकर माता-पिता बनकर उसका भरण-पोषण करते हैं, उसे स्कूल भेजते हैं। स्कूल में वह एक होशियार छात्र के रूप में जानी जाती है। एक बार स्कूल के ट्रस्टी यशवंतजी के सामने उसने नारी-मुक्ति का भाषण दिया और इस भाषण से प्रभावित हुए यशवंतजी उसके बाबा के सामने सौदामिनी से विवाह का प्रस्ताव रखते हैं। बाबा और सौदामिनी आनंदित हो जाते हैं। आर्य

समाज पद्धति के अनुसार उनका विवाह सम्पन्न होता है। सौदामिनी को लेकर वे नैनिताल चले जाते हैं। वहाँ अतिथि को खुश करने के लिए वे सौदामिनी को उसके कमरे में भेज देते हैं। पति की इस घटिया मनोवृत्ति के कारण सौदामिनी टूट जाती है और इसी टूटती हुई मानसिकता में ही प्रथम पुत्री को जन्म देती है। किसी तरह एक साल व्यतीत करके पुनःश्च एक बार पति द्वारा शोषित होती है और निश्चय करके वह घर छोड देती है। बाबा के पास वापस आने के उपरान्त द्वितीय कन्या "प्रिया" का जन्म होता है। स्कूल में अध्यापिका की नौकरी करके वह अपने परिवार का भरण-पोषण करती है। स्कूल के प्रधानाध्यापक केशवजी सौदामिनी से प्यार करते हैं। सौदामिनी को भी उनके प्रति आकर्षण निर्माण हो जाता है, पर पारिवारिक परिवेश के कारण दोनों विवाह बन्धन में बँधे नहीं जाते। सौदामिनी नहीं चाहती थी कि वह किसी औरत का घर उजाड़े, लेकिन सौदामिनी के इस स्नेह-संबंध का पुत्री पर बुरा असर पड़ता है। वह माँ को ही दोषी ठहराती हैं। और प्रेमी के साथ भाग जाती है। दूसरी पुत्री प्रिया देखने में आकर्षक है। अतः उसका विवाह पिता यशवंतजी मिल मालिक के इकलौते बेटे के साथ करना चाहते हैं, परंतु यह चाहना स्नेहवश नहीं तो स्वार्थवश था। जो खेल उन्होंने सौदामिनी के साथ खेला वही खेल प्रिया के साथ भी खेला। प्रिया और अरूण सगाई के बाद समीप आते हैं और प्रिया गर्भ धारण करती है। जब माता के मन में यह बात आती है तो माँ-बेटी शारीरिक और मानसिक रूप से लड़खड़ा जाती हैं। पिता यशवंत पैसा देकर गर्भ गिरवाने को कहते हैं। कुछ दिनों के पश्चात् मनसिज प्रिया के जीवन में आता है। मनसिज के व्यक्तित्व में भी वही बात नज़र आती है। प्रिया सोच-सोचकर पागल-सी बन जाती है। इतने में चित्रा जर्जर अवस्था में अपने दो दुबले-पतले बच्चों को लेकर घर आती है। अचानक बाबा की मृत्यु हो जाती है। उसी दिन प्रिया निश्चय कर लेती है कि वह विवाह नहीं करेगी।

लेखिका ने परिस्थितियों में घिरी नारियों का चित्रण किया है। विषम परिस्थितियों में समाज से लड़कर निरंतर जीने की चाह लेकर वे नारियाँ जीवन-यापन करती रहती हैं। सभी नारी पात्र खण्डित व्यक्तित्व वाले हैं। प्रिया सोचती है कि, "ईंट-पत्थरों से मंदिर उठाने के स्थान पर दुनिया पहले तो उन्हीं ईंट-

पत्थरों का प्रयोग, मार-मार कर उन देव-प्रतिमाओं को खंड-खंड करने में करती है।"[1] उसकी माँ भी ऐसी ही एक खंड प्रतिमा है।

नारी की अंतस वेदना का मर्म-भरा मनोवैज्ञानिक चित्रण उपन्यास में दृष्टिगोचर होता है। पूरा उपन्यास नारी आक्रोश से भरा हुआ है, पुरुष प्रधान संस्कृति में छली जाने वाली नारी का क्रंदन सुनाई देता है। पुरुष स्वयं कितने ही गुनाह क्यों न करें, पर वह दोषी नहीं, लेकिन नारी बेगुनाह होकर भी गुनाहगार ठहरायी जाती है। नारी स्वतंत्रता का ढोल तो पिटा जा रहा है, पर उसकी स्थिति में जरा भी परिवर्तन नहीं है। इस कथावस्तु के माध्यम से नारी के माप-दण्ड का प्रश्न समाज के सामने रखा गया है।

इस उपन्यास की पात्र-सृष्टि में विशेषतया नारी का व्यक्तित्व प्रखरता से चित्रित किया गया है। नायिका प्रधान उपन्यास होने की वजह से प्रिया के व्यक्तित्व को उभार कर सामने रखने की कोशिश की है।

"प्रिया" : सुशिक्षित और कामकाजी नारी की विवाह के प्रति नफरत

"प्रिया" उपन्यास का केंद्रीय पात्र प्रिया है। दिखने में अत्यन्त सुन्दर तथा आकर्षक है। उसके बाबा कहते हैं, "जानती है प्रिया, तेरी नानी कैसी थी···? बिलकुल तेरी जैसी, ऐसी ही कान तक खिंची भोली मृगी-सी आँखें, ऐसे ही स्याह, रेशमी, कमर के नीचे तक झूलते केश, ऐसी ही निर्दोष मुसकान···। बस, तू गोरी है, तेरी नानी सांवली थी।"[2] अप्रतिम सौन्दर्य की प्रतिमा प्रिया पढ़ाई में भी बहुत तेज थी। बी·ए·में प्रथम श्रेणी में प्रथम आती है और बी·एड्·में भी प्रथम श्रेणी में पास हो जाती है। उसके व्यक्तित्व में सेवा-भाव प्रचुर मात्रा में दिखाई देता है। अपने बाबा की और माँ की सेवा करने में उसे आनन्द आता है। माँ को आराम मिले और बाबा की फॅन की इच्छा पूरी हो जाए इसलिए जल्द से जल्द नौकरी करना चाहती है। जब उसे देवदास पारो बनाना चाहता था, तब वह स्पष्ट शब्दों में कहती है कि, "मैं सिर्फ प्रिया हूँ - प्रिया ठाकुर।"[3] माता-पिता की आज्ञा का पालन करने वाली यह लडकी शिक्षित होकर भी उन्हीं द्वारा चुने

गये वर के साथ एंगेजमेन्ट करती है, लेकिन सिवाय शोषण के उसे कुछ प्राप्त नहीं होता। वह जिन्दगी भर छटपटाती रहती है। उसके व्यक्तित्व में अतुलनीय तार्किकता दिखाई देती है। वह बाबा, माँ, बहन की वैवाहिक जिन्दगी देख चुकी है। इसलिए वह अपनी दीदी से कहती है - "अच्छा दीदी···माना···शादी···कर लूंगी··· तुम केवल इतना बता तो···कौन-सा ब्याह करूँ - बाबा वाला, माँ वाला या तुम्हारा वाला···? या इतना ही बता दो, कैसा प्यार करूँ···देवदास जैसा···अरूप आहुजा जैसा···या मनसिज जैसा··?"[4] प्रिया के ये शब्द उसकी दर्दभरी दासतां को चित्रित तो करते हैं, पर साथ-ही-साथ असीम वेदना सहने वाली प्रिया के दृढ व्यक्तित्व का परिचय भी कराते हैं।

सौदामिनी : पति के शोषण का धिःकार और आत्मनिर्भरता का स्वीकार

सौदामिनी रविशंकर की इकलौती बेटी है। दिखने में सुन्दर और पढ़ाई में तेज छात्रा थी। स्कूल में जब नारी-मुक्ति पर भाषण देती है, तो मंत्रीजी को भी प्रभावित करती है। परिणामतः मंत्रीजी के साथ उसका विवाह हो जाता है, परंतु विवाह का यह बन्धन उसके लिए फाँसी का फंदा बन जाता है। परंतु कुछ भी न कहते हुए वह सबकुछ सह लेती है। अपने पति द्वारा शोषण का शिकार बनी सौदामिनी एक साल तक यह नरक यातनाएँ भुगतती रहती रही। तद्उपरान्त पुनःश्च पितृगृह में लौट आती है। दो बच्चियों का और पिता का भरण-पोषण करने के लिए स्कूल में अध्यापिका की नौकरी करती है। स्कूल के मुख्याध्यापक उसकी ओर आकर्षित होते हैं। उसके मन में भी उनके प्रति सेवा-भाव निर्माण होता है, परंतु नैतिक मान्यताओं का खयाल रखकर वह उनके विवाह प्रस्ताव को ठुकरा देती है। उसके व्यक्तित्व में त्याग, सेवा, सहनशीलता, परिश्रम, संयम आदि अनेक गुण दिखाई देते हैं। प्रारम्भ में भक्तिभाव में लीन रहने वाली सौदामिनी, जीवन के कटु यथार्थ से विवश बनती है और धार्मिक मूल्यों को ठुकराती है। उसका व्यक्तित्व खण्डित व्यक्तित्व है। अपने खंड-खंड अस्तित्व को लेकर वह अंत तक छटपटाती रहती है, पर पति के घर नहीं जाती।

सौदामिनी का पिता रवि ठाकुर एक आत्म-पीड़ा से पीड़ित पात्र है। जब वह कुम्हार की छोकरी राधा और ठाकुर एक होने का अपराध करते हैं - उसी समय राधा तीन महीने की सौदामिनी को छोडकर चली जाती है। राधा की यादों पर वे अपनी जिन्दगी बिताते हैं। सौदामिनी को माता-पिता की ममता देकर भरण-पोषण करते हैं। उसकी यातना, परेशानी दूर करने की कोशिश करते हुए प्रिया को कहते हैं, "तो सुन, मैं चाहता हूँ कि अब तू कुछ कमाने लगे, तो सौदामिनी को कुछ आराम हो जाय। ऐसे तो मर जायेगी तेरी माँ, मेरी अभागिन बेटी···।"[5] जल्द-से-जल्द नौकरी पाने के लिए प्रिया बी·एड्·में प्रवेश लेती है।

रविशंकर ठाकुर एक आदर्श माता-पिता सिद्ध हो जाता है।

यशवन्त : पत्नी और पुत्री की देह का विक्रेता

यशवंतजी शहर के प्रतिष्ठित आदमी और शहर के जाने-माने नेता हैं। पूरा शहर उनको जानता था। मंत्री यशवंत का वक्तव्य और चित्र समाचार पत्रों में निरंतर छपता रहता। सामाजिक मान्यता प्राप्त होने के कारण वे नैतिक मानदण्डों को भूल चुके थे। गरीब परिवार की लड़की सौदामिनी को ठगाने में उन्हें कुछ भी बुराई नहीं लगती। समाज के रक्षण कर्ता नारी भक्षण कर्ता के रूप में दिखाई देता है। प्रथम पत्नी जीवित होते हुए भी द्वितीय विवाह करते हैं और द्वितीय पत्नी का उपयोग एक भोग का साधन के रूप में करते हैं। घर आये अतिथि को खुश करने के लिए उसका इस्तेमाल करते हैं। राजनीतिक और आर्थिक सम्बन्धों के खातिर अपनी बेटी प्रिया को भी दाँव पर लगाने में आगे पीछे नहीं देखते हैं। फूल-सी सुंदर बेटी का जीवन भी खराब कर देते हैं। पिता के स्थान पर एक व्यापारी की भूमिका निभाते हैं। मानवीय सम्बन्धों की उपेक्षा कर नारी शोषण करते रहते हैं।

लेखिका ने वर्तमान कालीन नेताओं की पोल खोलने का प्रयास यशवंतजी के माध्यम से किया है। कथनी और करनी में अंतर करने वाले नेताओं के जुल्मों से समाज कैसा पिसा जा रहा है, यह यशवंतजी के चरित्र से स्पष्ट हो जाता है।

चित्रा : अंधे प्रेम की शिकार

चित्रा सौदामिनी की बड़ी बेटी है। वह अपने जीवन में स्वयं के विचारों को स्थान देती है। सामाजिक बन्धनों को ठुकरा कर प्रेमी के साथ भाग जाती है। अपनी ममतामयी माता के प्रति उसके मन में बिलकुल आदर भाव नहीं है। जब माता उसे सुरेश से मिलने नहीं देती, तब वह स्पष्ट शब्दों में कहती है कि, "मैं सुरेश से प्रेम करती हूँ।···सुरेश भी मुझ पर जान देता है···हम एक दूसरे से अलग नहीं होंगे। देखूँगी तुम मुझे कैसे रोकती हो।"[6] माँ के साथ उदण्डतापूर्ण व्यवहार करने वाली चित्रा स्वयं पति का चुनाव भी करती है और दो बच्चों को लेकर पुनःश्च माँ के पास आने का निर्णय भी लेती है। चित्रा का व्यक्तित्व दोष युक्त है। प्रेम में अंधी बनी चित्रा जिन्दगी भर छटपटाने के सिवाय और कुछ नहीं कर पाती।

श्रीराम आहुजा शहर का बड़ा व्यापारी है। उपन्यास का यह गौण पात्र है। नेता यशवंत के साथ रिश्ता जोड़कर व्यावसायिक लाभ उठाना चाहता है।

श्रीराम आहुजा का इकलौता बेटा अरूप आहुजा है। उसकी एंगेजमेंट प्रिया के साथ हो जाती है। पाश्चात्य विचारों वाला अरूप विवाह के पूर्व ही प्रिया को क्लब तथा पार्टियों में ले जाता है। इतना ही नहीं तो उसके साथ यौन-सम्बन्ध भी रखता है। अतः यह एक पाश्चात्य विचार प्रणाली के प्रभाव से प्रभावित पात्र के रूप में चित्रित किया गया है।

देवदास : अभिशप्त निर्धनता

देवदास उपन्यास का गौण पात्र है। वह नायिका प्रिया का प्रथम प्रेमी है। वह प्रिया को पारो बनाना चाहता था, पर उसकी यह आस पूरी नहीं हो पाती, क्योंकि वह गरीब परिवार का लड़का था। उसके व्यक्तित्व में ईमानदारी नजर आती है, परंतु बेकार होने के कारण वह गुण भी दुर्लक्षित हो जाता है।

डॉ·मनसिज : हवस का पुजारी

डॉ·मनसिज चौधरी प्रेतों का पोस्ट-मार्टम करने वाला डॉक्टर है। जब उसकी और प्रिया की मुलाकात हो जाती है, तब प्रिया के प्रति उसके मन में प्रेम-भाव निर्माण हो जाता है। वह प्रिया के साथ शादी करना चाहता है, परंतु उसकी फिलासाफी-क्लिअर-कट फिलासाफी है। खाओ-पिओ, मौज-मनाओ इस परम्परा का वह पाइक है। जब प्रिया मनसिज के व्यक्तित्व के इस पहलू को देखती है तो उसके मन में भय निर्माण हो जाता है। उसे अपने अस्तित्व पर संदेह होता है, क्योंकि मनसिज के जीवन में नीलिमादास और अनुराधा जैसी नारियाँ पहले ही प्रवेश कर चुकी थीं। मनसिज इस बात को भी स्पष्ट कर देता है कि अब वह प्रिया के सिवाय और किसी को जीवन में स्थान नहीं देगा। फिर भी प्रिया विवाह अस्वीकार कर देती है।

नारी समस्या को लेकर लिखी गयी, यह कृति विविध उद्देश्यों से भरी हुई है। लेखिका ने नारी के मन की चाह और यथार्थता, और इसका अंतर स्पष्ट करने की कोशिश की है। नारी हमेशा किसी पुरूष की प्रिया बनना चाहती है, लेकिन निरंतर पुरूष द्वारा छली गई है। उसकी प्रियत्व की आस अतृप्त रह जाती है। परिणामतः लेखिका ने समाज का ध्यान इस ओर खिंचना चाहा है, पुरूष प्रधान संस्कृति में पुरूष नारी के रूप का उपासक है, उसके शरीर के प्रति आसक्त है। परंतु पुरूष "अहं" और नारी शोषण के अलावा और कुछ नहीं चाहता। पुरूष वर्ग की पौरूषता, कठोरता और निर्भयता स्पष्ट करना लेखिका का मंतव्य है। नारी पक्ष लेकर आक्रोश करने वाली लेखिका पुरूष वर्ग पर आघात करती है, क्योंकि पुरूष जाति ने ही समाज के कानून बनाये और तोडे हैं और नारी को कठपुतली बना दिया है। इसी कारण नारी विद्रोह का स्वर उपन्यास में सुनाई देता है। आधुनिक युग में युवक और युवतियाँ पाश्चात्य विचारों से प्रभावित नज़र आते हैं। उनके प्रेम में शारीरिक सम्बन्ध को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। परंतु इसके बाद छली जाती है, केवल नारी। नारी को जो यह कटु यथार्थ भोगना पडता है, उससे नारी जाति सचेत हो जाए। यह चाह लेखिका के मन में है। आज की नारी पुरूष को

समझा देना चाहती है कि वास्तव में नारी क्या है ? पुरूष भी नारी की सहनशक्ति से भलि-भाँति परिचित है। आज की टूटती परिवार व्यवस्था पर भी लेखिका ने व्यंग्य कसा है। डॉ॰सुषमा गुप्ता के अनुसार - "नारी के चिर, मुग्ध, आहत, अतृप्त प्रियत्व को समर्पण कर मानो आहत, तिरस्कृत नारी के घायल व्यक्तित्व को सांत्वना दी है। शायद यही दीप्ति खण्डेलवाल का उद्देश्य है।"

"कोहरे" कथ्यचेतना : दाम्पत्य-सम्बन्धों के बीच कोहरे भरी स्थिति

दीप्ति खण्डेलवाल के उपन्यासों में स्त्री-पुरूष सम्बन्धों की सूक्ष्मता नज़र आती है। आधुनिक जीवन जीने वाले और भोगने वाले स्त्री-पुरूषों का विवेचन उसमें प्राप्त होता है। शिक्षा के कारण अति वैयक्तिकता का निर्माण नारी और पुरूष व्यक्तित्व में दिखाई देता है। आधुनिक नारी का अपने अस्तित्व के प्रति सजग रहना और पुराने मूल्यों को ठुकरा कर नव-मूल्यों को प्रश्रय देना, "कोहरे" उपन्यास में स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है। आधुनिक परिवेश में परम्परागत मूल्य खण्डित हो गये हैं और नव-मूल्य विकसित हो रहे हैं। शिक्षित नारी जागृत हुई है और अपने अधिकारों की माँग करने लगी है, इतना ही नहीं तो वह अपने अस्तित्व के प्रति सजग है। पारिवारिक जीवन के अंतर्गत जब किसी गैर का प्रवेश हो जाता है, तो अपने आप परिवार का ढाँचा चरमराने लगता है। पति-पत्नी के बीच तीसरे का आगमन तो वैवाहिक जीवन की नींव को हिला देता है। पति का अनैतिक एवं उच्छृंखल आचरण पत्नी के मन में घुटन, कुण्ठा, तनाव का बोध निर्माण करता है, जिसकी वजह से जीवन धुसरित बन जाता है, मानो उस पात्र के जीवन में चारों तरफ कोहरा घिर आता है। परिणामतः वह अपने आगे न देख सकता है, न सोच सकता है। ऐसी स्थिति में उचित दिशा भी बिगड़ जाती है और पति-पत्नी आजीवन यंत्रणाएँ झेलने पर विविश बन जाते हैं।

"कोहरे" उपन्यास का कथा-जाल एक ऐसी नारी को केंद्र में रखकर बुना गया है, जो प्रेम, विवाह, तलाक आदि के बीच पिसी नारी अपने अस्तित्व के प्रति सजग है। सुनिल और स्मिता के बीच जो तनाव निर्माण होता है, उसका प्रमुख कारण होता है - अस्तित्व। पढ़ी-लिखी सुंदर स्मिता अपना अस्तित्व बनाये रखना

चाहती है। संवेदनशील हृदय वाली यह युवा नारी कविताओं का सृजन भी करती है और गीत भी गाती है। उसका पति सुनील आकर्षक व्यक्तित्व वाला युवक है। वह अपनी पत्नी को अपने रेशमी पाश में बाँधना चाहता है। उसके व्यक्तित्व में "अहंम्" की अत्यधिकता नज़र आती है। उपर से सभ्य, सुसंस्कृत दिखाई देने वाला सुनील पत्नी पर अपने आचार-विचार थोपना चाहता है। वह स्पष्टतः उसे कहता है कि तुम कविता तो करोगी ही केवल मेरे लिए। इतना ही नहीं तो गाना भी सिर्फ मेरे लिए ही गाओगी, ये बातें स्मिता को हैरान कर देती हैं। दिन-ब-दिन उसके अधिकारों का बोझ बढ़ता ही जाता है। उसके मन में घुटन,कुण्ठा निर्माण हो जाती है। प्रेमहीन वैवाहिक जीवन से वह उब जाती है। जीवन का खाली पन भरने के लिए उसका नारित्व मातृत्व की माँग कर बैठता है। मातृत्व की माँग एहसान के रूप में पूरी कर दी जाती है। परंतु पुत्र के आगमन से भी दोनों के वैवाहिक जीवन में कुछ अन्तर नहीं आया। पति-पत्नी सम्बन्धों में फासला बढता ही रहा। स्मिता अंतस् में निरंतर सोचती रहती कि आखिर सुनिल निरंतर उस पर हावी क्यों रहता है। वह तो अपने ढंग से जीना चाहती थी, परंतु सुनिल तो उसे अपने ढंग पर नाचने के लिए मजबूर कर देता है। परिणामतः वैवाहिक जीवन का अकेलापन उसे सालने लगता है - "वह मुझे, मेरे "स्वयं" से भी तो मिलने नहीं देते थे।"[7] दोनों के बीच कोहरा घिर आता है और दोनों एक-दूसरे के लिए मानो अस्पष्ट बन जाते हैं।

सुनील रंगीन-मिजाजी आदमी है। वह किसी एक भावना में जुड़कर जीना नहीं चाहता। जीवन का हर एक क्षण रसपूर्ण रीति से व्यतीत करना चाहता है। विवाह के पूर्व और विवाह के बाद भी उसका आचरण एक जैसा ही रहता है। अर्थात् विवाह उपरान्त भी वह पर-नारी के संपर्क में आता है। यह पर-नारी इरा उन्मुक्त आचरण करती है, तो उसके आचरण के कारण स्मिता संकुचित होती चली जाती है। सुनील को विवाह बन्धन उचित नहीं लगता। एक ही पत्नी से जिन्दगी भर चिपक कर रहना उसके बस की बात नहीं। परिणामतः वह स्मिता से तलाक लेना चाहता है। अपनी पत्नी से स्पष्ट कहता है, तुम भी आझाद रहो

और मैं भी आझाद रहूँगा। उसकी विचार धारा से स्मिता को मायके लौटना उसकी वैयक्तिकता का प्रतीक है। वह सुनील के सामने न झुकती है, न गिड़गिड़ाती है, पर उसका अंतर्मन टूट जाता है। पति का अनैतिक आचरण उसे पूरी तरह कचोटता है। उसे लगता है कि पति-पत्नी सम्बन्ध मानो खरगोश जोड़े के समान है, जिस तरह खरगोश की जोडी उन्मुक्त रूप से जीवन जीते हैं, उसी तरह मानो सुनील भी एक पंछी के समान उन्मुक्त जीवन चाहता है। परंतु सुनील चाहे पंछी हो पर वह स्वयंम् मानव बनकर जीना चाहती थी। अपने अस्तित्व को नकारने वाले पति को ठुकरा कर वह पितृ-गृह में वापस आती है।

उसके मम्मी-पप्पा भी भिन्न व्यक्तित्व वाले पति-पत्नी थे। उनका जीवन तो असंगतियों से भरा हुआ था, परंतु पुरानी पीढ़ी के कारण दोनों भी सम्बन्धों को सिर्फ झेलते रहते हैं। खण्डित व्यक्तित्व होते हुए भी जुड़कर जीवन-यापन करते हैं। आज के आधुनिक स्त्री-पुरूष ऐसा जुड़ना पसन्द नहीं करते वे परंपरागत मूल्यों को चुनौती देते हैं। स्मिता की माँ अपमान, तिरस्कार की विष पिती रही, पर उफ् तक नहीं करती। प्रबल व्यक्तित्व वाले मेजर के सामने वह दीप-शिखा के समान थी। अपने पति के सामने वह हार चुकी थी, पर स्मिता ऐसी नारी नहीं थी, वह सहजता से पराजित होने वाली नारी नहीं है, पर उसके व्यक्तित्व की दूसरी यथार्थता यह भी है कि भावुक होने के कारण वह सुनील को भूल नहीं पाती थी। तलाक के कारण दोनों का विवाह बन्धन तो समाप्त हुआ, पर स्मिता की भावुकता और बढ़ गई। उसके मम्मी-पापा ने इस बात को जान लिया, परंतु जिन्दगी ढ़ोने के सिवाय वे कर भी क्या सकते थे।

पापा-मम्मी ने बार-बार उसे समझाया कि भावुकता छोडकर यथार्थता का स्वीकार करो, एक नया जीवन शुरू कर दो। प्रशांत नामक पुरूष जो विवाह के पहले उसे जानता था, इतना ही नहीं तो उसकी कोमल भावनाओं की कद्र करता था, उस प्रशांत के बारे में सोचने के लिए उसे कहा जाता है। जिन्दगी के थपेडे सहते हुए वह इस निर्णय तक आती है कि जीवन-यापन के लिए आर्थिक ठोस आधार आवश्यक हैं।

प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से वर्तमान कालीन दाम्पत्य सम्बन्ध पर प्रकाश डाला गया है। शिक्षित नारी तथा पुरुष परम्परागत मूल्यों को ठुकराते हैं और नव-जीवन मूल्यों को अपनाते हैं। अस्तित्व के प्रति सजग आज की नारी निरंतर वैयक्तिक द्वंद में घिरी रहती है, यह कडवी सच्चाई प्रस्तुत उपन्यास में दृष्टिगोचर होती है।

सिमी : वैयक्तिक अस्तित्व के लिए विवाह-विच्छेद

प्रस्तुत उपन्यास नायिका प्रधान है। इस उपन्यास की नायिका सिमी है, जो मध्यवर्ग परिवार की सदस्य है। उसका बचपन बहुत ही लाड-प्यार में बिता है। उसके पिताजी आधुनिक विचारों वाले थे। उनके मन में शिक्षा के प्रति बेहद लगाव था। अतः वे अपनी पुत्री सिमी को भी पढ़ाते हैं। सिमी राष्ट्रभाषा में एम्·ए· की उपाधि प्राप्त करती है। वह स्वयं के भविष्य के बारे में खुद सोचती है। अपने विवाह का फैसला भी वह खुद करती है, जिसे पिताजी खुशी से अनुमति देते हैं। शिक्षित नारी होने के कारण उसके व्यक्तित्व में स्वतंत्रता, चयन तथा अस्तित्व के प्रति सजगता निर्माण होती है। सुनील द्वारा लाख कोशिशें की जाने पर भी वह अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व कायम रखने का प्रयास करती है। पति को फटकारते हुए वह कहती है - "यह तुम्हारी ज्यादती है कि तुम मुझे कुचल ही देना चाहते हो···क्या मैं इतनी साधारण हूँ कि तुम मुझे ऐसे मिटा दोगे ?"[8] सुनील की ज्यादती का सख्त विरोध करने वाली सिमी कोमल भावनाओं का लहराता सागर भी है। सुनील को छोड़कर वह अपने मायके चली जाती है, लेकिन उसका मन बार-बार उसके इर्द-गिर्द घुमता रहता है। सिमी ने अपने जीवन में झूठी परम्परा तथा अंधविश्वासों को ठुकरा कर अपनी भावनाओं के अनुसार मूल्य परिवर्तन करके जीवन-यापन किया है।

सुनील : स्वच्छन्द यौन जीवन के प्रति आसक्त

सुनील का सम्पन्न परिवार में भरण-पोषण हुआ है। सुनील "अहं" से ग्रस्त पुरुष के रूप में चित्रित है। उसके पास ढेर सारी सम्पत्ति है, उससे वह जो चाहे चीज खरीद सकता है। वह हर चीज और व्यक्ति के प्रति व्यवहार की

नजरों से देखता है।

उसका विवाह जब सिमी के साथ हो जाता है, तब वह उसकी भावनाओं की कद्र नहीं करता, बल्कि अपनी इच्छा-आकांक्षाओं के अनुसार रहने के लिए मजबूर करता है। वह चाहता है कि सिमी जो कुछ भी करती है, उसके लिए करती है। जब सिमी रेडियो पर प्रोग्राम पेश करती है, तो सुनील उसे डाँटता है कि मेरी इजाजत के बिना रेडियो पर प्रोग्राम क्यों पेश किया ? वह सिमी की कला, उसकी भावना, आस्था, समर्पण नजर अंदाज नहीं करता।

सुनील अपनी पत्नी सिमी के होते हुए भी अन्य स्त्री के साथ शारीरिक सम्बन्ध रखता है। इरा घोष के कारण ही वह सिमी के साथ तलाक लेता है। आखिर जीवन एक समझौता है। लेकिन सुनील "अहं" के कारण अमानवीय कृत्य करने में हिचकिचाता नहीं।

मेजर सिन्हा : पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित

सिमी के पिताजी मेजर सिन्हा युद्ध में शेर हैं, तो घर में मेमना। उन्हें युद्ध में बंदुक की गोली लग जाती है, तो वे उसे औषधों का इस्तेमाल करके निकालते हैं।

मेजर होकर भी बेटी की असहय वेदना भरी स्थिति को देखकर उसके पैर लड़खडा जाते हैं। आँखों से गंगा-यमुना बहने लगतीं हैं। निशीथ को भी उसकी मर्जी के अनुसार विवाह करने की छूट देते हैं।

श्यामा के साथ शादी हो जाती है, लेकिन उससे पहले वे अपर्णा चटर्जी से प्यार करते थे। परंतु उसके स्वार्थ को देखकर उससे दूर चले जाते हैं और पहले अपनी पत्नी को श्यामा की तरह काली कहकर मजाक करने वाले उसकी आस्था, प्रेम, एकनिष्ठ भाव को देखकर उसे किरण के नाम से पुकारने लगते हैं।

अपनी बेटी सिमी और पुत्र निशीथ को सुखी देखना चाहते हैं। लेकिन सुनील जब सिमी से तलाक लेता है तो उनके पास नियति के आगे हाथ रखने के सिवा दूसरा कोई चारा नहीं है। वे पीड़ित होकर हमेशा नशे में डूबते हैं ताकि

वेदनाओं से छुटकारा मिल सके।

श्यामा : यथार्थ से आधुनिकता की ओर झुकाव

श्यामा का जन्म एक अमीर जमींदार के घर में हुआ। बचपन से ही परम्परा, रूढ़ि आदि के संस्कार उसके बालमानस पटल पर असर कर गये थे। बचपन से ही वह माधव से प्यार करती थी। माधव उसे अच्छी ईमली, आम आदि खाने को देता था। बड़े होने पर माधव श्यामा से शादी करना चाहता है, लेकिन अमिरी-गरिबी के बीच की खाई उन्हें एक होने नहीं देती।

श्यामा का विवाह मेजर सिन्हा के साथ हो जाता है। संस्कारशील होने के कारण पति को परमेश्वर मान कर माधव को भूल जाने का प्रयास करती है।

श्यामा परंपरा और रूढ़ियों को मानने वाली है। फिर भी समय के साथ अपने विचारों में परिवर्तन भी करने वाली है। श्यामा अपनी बेटी रिमी को दूसरा विवाह करने की व्यावहारिक दृष्टि से सही सलाह दे देती है। इसीसे वह आधुनिक विचारों वाली नारी लगती है।

इस प्रकार दीप्ति खण्डेलवाल ने श्यामा के द्वारा समयानुरूप बनते-बिगड़ते मूल्यों को आत्मसात करने वाली नारी के रूप में चित्रित किया है।

अन्य पात्रों में निशीथ, मनोरमा, डॉ॰माथुर, मिकी, इरा घोष, माया चौहान, सोहनलाल, मिसेज शेफाली आदि का अंतर्भात किया जा सकता है।

प्रस्तुत उपन्यास का उद्देश्य समाज के वर्ग से हटकर व्यक्ति तथा उसके अंतर्चेतना को प्रधानता देता है। लेखिका जीवन की संश्लिष्टता से विशिष्टता की ओर बढ़ने वाले जीवन का अंकन करना चाहती है। आधुनिक शिक्षित दाम्पत्य जीवन में जो जटिल समस्याएँ निर्माण हो रही है, उनका यथार्थ रूप समाज के सम्मुख रखना चाहती है। सड़ी-गली सामाजिक मान्यताएँ तोड़कर नव-मान्यताओं का निर्माण करने वाली नारी के जीवन की विडम्बना का बोध कराना और उसको न्याय दिलाना, इस उद्देश्य से भरी कृति में सूक्ष्म मानसिक स्थितियों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया गया है। इसमें जीने की ललक, नारी का शक्तिमान व्यक्तित्व रूपाईत किया गया

है। शिक्षित नारी की कोहरे भरी जिन्दगी को पारिवारिक धरातल पर चित्रित करने का उद्देश्य दिखाई देता है। आज की शिक्षित नारी जागृत है, समान अधिकार की अपेक्षा रखती है, अपने अस्तित्व के प्रति सजग है, अस्तित्व बनाये रखने के लिए वह द्वंद रहित है। इन सभी बातों को चित्रित करना लेखिका का उद्देश्य रहा है।

संक्षेप में आधुनिक काल में परिवर्तित होने वाले जीवन-मूल्यों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करना और आज के जीवन की कडवी सच्चाई समाज के सम्मुख रखना, इस उद्देश्य को लेकर कृति का सृजन किया गया है, ऐसा लगता है।

"प्रतिध्वनियाँ" कथ्यचेतना : वैवाहिक जीवन की असंगतियों का लेखा-जोखा

दीप्ति खण्डेलवाल लिखित "प्रतिध्वनियाँ" उपन्यास का नायक नीलकांत के जीवन की गतिविधियों पर आधारित है। प्रस्तुत उपन्यास में नीलकांत के जीवन का यथार्थ लेखा-जोखा प्रस्तुत हुआ है। नीलकांत का जन्म एक गरीब परिवार में हुआ। उसके माता-पिता आटा-दाल की दूकान में तराजु-बाट पर अनाज ही नहीं शायद जिन्दगी का हर पहलु, हर मूल्य भी तोला करते थे। उसके माता-पिता के सम्बन्धों में पुरूष प्रधान संस्कृति का एवं पुरूष वर्ग के "अहं" का दर्शन होता है। उसकी माँ बहुत अच्छा गाती थी, परंतु उसका यह गाना पिताजी को पसन्द नहीं था। वे उसे कहते हैं कि, "वाह री, मेरी मीराबाई। तुझे किस किसन कन्हाई का बिरह है···? सुन री। मुझे यह गाना-वाना अच्छा नहीं लगता। मुँह बंद करके रहाकर।"[9] स्पष्ट है कि नीलकान्त के पिता नारी को स्वतंत्र अस्तित्व देना नहीं चाहते थे। इन पारिवारिक संस्कारों के कारण नीलकान्त भी अपने जीवन में नारी के अस्तित्व को दबाकर अपना पुरूष "अहं" कायम रखना चाहता है। उसके जीवन में अनेक नारियाँ आती हैं। सबसे पहले उसका सम्बन्ध पति के रूप में अचला से स्थापित होता है, जो संपन्न परिवार की इकलौती लड़की है। इससे पहले नीलकान्त का सम्बन्ध शुभ्रा पटेल के साथ स्थापित होता है, जो चुंबन और अलिंगन तक ही सीमित रह जाता है। शुभ्रा पटेल सुन्दर और पढ़ी-लिखी है, लेकिन धनवान नहीं है। अतः नीलकान्त धन के खातिर अचला के साथ विवाह करता है। इस विवाह

से शुभ्रा पटेल को ठेंस पहुँचती है। वह अपनी आर्थिक स्थिति के कारण एक बूढ़े के साथ विवाह करती है। नीलकान्त को यह अनमेल विवाह अखरता है। उसकी पत्नी अचला का प्रेम विनय से था। आगे चलकर नीलकान्त का अगला सम्बन्ध बाल विधवा जया से होता है। जया और अचला एक दूसरे को जानती थीं। नीलकान्त जया से भी शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करता है। अचला, शुभ्रा और जया के बाद नीलकान्त का नया सम्बन्ध मोतीबाई वेश्या से स्थापित होता है। मोतीबाई को इस पेशा से मुक्त कराने की चाह नीलकान्त के मन में रहती है। परंतु मोतीबाई इस जीवन को छोड़ नहीं पाती। "वास्तव में नीलकान्त एक आत्मरत व्यक्ति है, जो सबकुछ पाना तो चाहता है, लेकिन देना नहीं चाहता।"[10] नीलकान्त की पत्नी अचला अपने प्रेमी विनय की सन्तान को जन्म देना चाहती है। परन्तु जब यह रहस्य नीलकान्त के सामने खुल जाता है, तब नीलकान्त उसके प्रेमी को मार डालना चाहता है, अचला से बदला लेना चाहता है। अचला का अंत आत्महत्या में होता है। नीलकान्त के जीवन में चार नारियाँ आती हैं, परंतु विडम्बना यह है कि किसी को भी वह पूरी तरह नहीं पा सका। नीलकान्त खण्डित नायक है। राजनीति में सफलता पाने के बाद भी आदमी के रूप में वह पराजित इन्सान है। वह अंत में पश्चातापदग्ध आदमी के रूप में चित्रित किया गया है। अपने जीवन की अंतिम घडियाँ गिनने के लिए वह नैनिताल के गिरी-शिखर पर चला जाता है।

सामान्यतः उपन्यास का मुख्य विषय मानव और उसका चरित्र है। प्रस्तुत उपन्यास में भी चरित्र को ही प्रधानता देने की कोशिश की गई है। उपन्यास में प्रधान पात्र नीलकान्त है। इसके साथ-साथ अचला, शुभ्रा पटेल, जया, मोतीबाई, रागिनी, विनय, गंगा, उमाकान्त, रायबहादुर मेहता आदि पात्र आये हैं।

नीलकान्त : भ्रष्ट राजनीतिक नेता और लेडि-किलर

नीलकान्त, उमाकान्त पंसारी और माता गंगा का इकलौता बेटा है। शहर के होस्टल में रहकर उसने हायस्कल की पढ़ाई पूरी की। विज्ञान विषय में प्रथम आने के कारण उसे मिडल प्राप्त होता है। रसायन शास्त्र में एम्·एस्सी· की उपाधि भी वह प्राप्त करता है। जब उसकी माँ परलोक सिधर जाती है, तब कुछ दिनों

के बाद वह रायबहादुर मेहता के घर में उनकी जायदाद की देखभाल करने के लिए रहता है। दोनों के बीच बाप-बेटे जैसा रिश्ता निर्माण होता है। आगे चलकर वह उनका पुत्र ही बन जाता है।

नीलकान्त के व्यक्तित्व में उच्छृंखलता नजर आती है। कालेज के दिनों में वह शुभ्रा से प्यार करता था, परंतु ऐश्वर्य के लिए उसको त्याग देता है। रायबहादुर मेहता की इकलौती बेटी को केवल धन के खातिर पत्नी बनाता है। जब उसे पता चलता है कि अचला विनय की ओर ही आकर्षित है, तब वह भी वासना की तृप्ति की तलाश में जया को खोज निकालता है। जया को मातृत्व प्रदान कर उसे छोड़ देता है। तत्पश्चात उसके जीवन में एक वेश्या आ जाती है। नीलकान्त का यह आचरण उसकी अतृप्त प्रेम और यौन-भावना का द्योतक है। वह पैसों के बल पर सबकुछ खरीदना चाहता है। राजनीति में सफल होने के लिए बलराम नामक आदमी की हत्या कर देता है। जानबूझकर बेटी की शादी अपने प्रतिद्वन्दी के लडके से करता है। बेटी को वत्सलता के स्थान पर साधन मानता है। उसके व्यक्तित्व में अनेक दोष पाये जाते हैं। लेखिका ने उसे एक भ्रष्टाचारी नेता, एक हत्यारा, एक लेडि-कीलर के रूप में चित्रित किया है। विपुल ऐश्वर्य का धनी नीलकान्त एक पराजित इन्सान के रूप में चित्रित किया है।

अचला : वैवाहिक मूल्यों को तिलांजलि और विवाह-पूर्व प्रेमी का स्वीकार

शहर के सबसे बड़े लक्ष्मीपुत्र सेठ रायबहादुर हरिश्चंद्र मेहताजी की इकलौती बेटी अचला है। उसका बचपन बड़ा लाड-प्यार से बिता है। वह दिखने में अत्यन्त सुन्दर है, मानो स्वर्ण से निर्मित रत्नजडित प्रतिमा ही है। वह विनय नामक क्लर्क से प्यार करती है। दोनों को प्रेम में आर्थिक स्थिति के कारण बाधा निर्माण हो जाती है। उसके पिता उसे विनय के साथ ब्याहना नहीं चाहते थे। वे तो नीलकान्त के साथ उसका विवाह करना चाहते थे। अतः अचला की मर्जी के खिलाफ उसका विवाह नीलकान्त के साथ हो जाता है। परंतु अचला एक ऐसी साहसिक प्रेमिका है कि जो अपने जीवन का पूरा लेखा-जोखा रात में ही पति के सामने प्रस्तुत

करती है और पति को स्पष्ट शब्दों में कहती है कि मैं विवाह उपरान्त भी विनय से अपना रिश्ता कायम रखूँगी। अचला के व्यक्तित्व में स्वतंत्रता एवं वैयक्तिकता का बोध होता है। वह अपने प्रेमी की संतान को जन्म देना चाहती है, परंतु जब पति नीलकान्त इस बात का विरोध करता है, तब वह नींद की गोलियाँ खाकर आत्महत्या करती है।

जया बाल-विधवा नारी है। वह नीलकान्त मेहता के भवन में काम करती है। बाल विधवा होने के कारण वह अपना जीवन दूसरों के आश्रय पर बिताती है। जब एक दिन नीलकान्त मेहता उसकी कोठी में जाते हैं, तब वह कहती है कि मैं अभी तक पवित्र हूँ। अब आपने मुझे स्पर्श कर ही दिया है, तो मैं समर्पित होने के लिए तैयार हूँ। आप के बाद और किसी का स्वीकार नहीं करूँगी।[11] वह अरूण नामक बेटे को जन्म देती है, परन्तु नीलकान्त के जीवन में उसकी वजह से कोई आपत्ति न आ जाए उसे दूर रखना चाहती है। वह दुर्बलता की मूरत इमानदान सेविका है। परंपरागत रूढ़ी को तोड़ने वाली नारी है। उसके चरित्र में सेवा, त्याग आदि गुण दिखाई देते हैं।

मोतीबाई शहर की मशहुर तवायफ है, सौन्दर्य की अनिंद्य प्रतिमा है। मैफिल में गाने वाली मोतीबाई बड़े-बड़े नेताओं को अपने हाथ में रखती है। वह पेशे से वेश्या जरूर है, पर अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखना चाहती है। नीलकान्त उसे बीवी बनाना चाहता था, परंतु मोहक रूप-यौवन का सौदा करने वाली यह नारी उसे स्पष्ट शब्दों में कहती है कि, "इसे खरीदने की कोशिश मत कीजिए।"[12] मोतीबाई के व्यक्तित्व में वैयक्तिकता, स्वतंत्रता आदि का बोध होता है। वह किसी के सामने झुकना नहीं चाहती। नैतिक मूल्यों को तिलांजलि देने वाली यह नारी अपने अस्तित्व को कायम रखने के लिए नीलकान्त का विवाह प्रस्ताव ठुकरा देती है।

उपर्युक्त पात्रों के साथ-साथ अनेक गौण पात्र भी उपन्यास में संक्षिप्त रूप में चित्रित किये गये हैं।

13133

दीप्ति खण्डेलवाल का यह उपन्यास विविध उद्देश्यों को लेकर लिखा गया है। लेखिका ने वर्तमान कालीन महानगरीय जीवन का बोध कराना और वर्तमान कालीन राजनीति से पाठकों को परिचित कराना यह उद्देश्य केंद्र में रखा है। महानगरीय जीवन से प्रभावित नीलकान्त का उन्मुक्त आचरण और परिस्थितिवश उसकी शिकार बनी नारियों के क्रंदन से आधुनिक नारी जीवन की विडम्बना का बोध कराया गया है। अचला शिक्षित होने पर भी उसे पिता की मर्जी के अनुसार विवाह करना पडता है, तो शुभ्रा जैसी पढ़ी-लिखी सुन्दर युवती को एक बूढे के साथ अनमेल विवाह करना पडता है। वर्तमान कालीन महानगरीय जीवन में अनमेल विवाह किस प्रकार किये जाते हैं, यह बात प्रस्तुत उपन्यास से स्पष्ट हो गयी है। नैतिकता के नये प्रतिमानों को चित्रित कर लेखिका ने आने वाली नयी नैतिकता से परिचित कराया है। विघटित जीवन-मूल्य और नये नैतिक मूल्य कृति द्वारा विवेचित करना लेखिका का मंतव्य है। धनवान तथा पूँजीपति लोग पैसों के बल पर कुछ भी कर सकते हैं, इस बात को स्पष्ट करने का प्रयास लेखिका ने किया है। वर्तमान कालीन राजनीति की पोल खोलना यह भी कृति का उद्देश्य रहा है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है -

1· विवेच्य उपन्यासों में परिवर्तित जीवन-मूल्य का चित्रण मुख्यतया स्त्री-पुरूषों के विविध संबंधों को आधार बनाकर किया गया है।

2· शिक्षित एवं कामकाजी नारी भी परिस्थितिजन्य विवाह जैसे पारंपारिक मूल्य को ठुकराकर अविवाहित रहना पसन्द करती है।

3· स्वातंत्र्योत्तर काल में भी पुरूषों द्वारा नारी का दैहिक और मानसिक शोषण प्रचुर मात्रा में किया जाता है और शोषित नारी प्रसंगवश विवाह-विच्छेद तथा आत्महत्या का शिकार बनती है।

4· आमतौर पर विवेच्य उपन्यासों में यह दिखाई देता है कि पुरूषों द्वारा विशेषतः सुशिक्षित और आत्मनिर्भर तथा सुंदर नारी का दैहिक और मानसिक शोषण किया जाता है, जिसके खिलाफ नारी आक्रोश उभरता है और मिट जाता है।

5· विवेच्य उपन्यासों में विवाह का एक नया प्रतिमान यह भी दिखाई देता है कि धनवान नारी का पति वास्तव में पति न होकर जायदाद का रखवाला ही बन जाता है।

6· यद्यपि दीप्ति खण्डेलवाल के उपन्यासों की संख्या अत्यन्त सीमित है फिर भी स्त्री-पुरूष संबंधों के नये मूल्यों को उद्घाटित करने में लेखिका कामयाब हुई है।

संदर्भ-सूची

1· प्रिया - दीप्ति खण्डेलवाल, सं·1976, पृ·87

2· वही , पृ·24

3· वही , पृ·73

4· वही., पृ·151

5· वही., पृ·39

6· वही , पृ·33

7· कोहरे - दीप्ति खण्डेलवाल, सं·1977, पृ·21

8· वही, पृ·23

9· प्रतिध्वनियाँ - दीप्ति खण्डेलवाल, सं·1978, पृ·24-25

10· वर्तमान हिन्दी महिला कथा-लेखन और दाम्पत्य जीवन - साधना अग्रवाल, सं·1995, पृ·139

11· प्रतिध्वनियाँ - दीप्ति खण्डेलवाल, सं·1978, पृ·56

12· वही, पृ·74